जैन दर्शन में जगत् की अवधारणा

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

जैन दर्शन के अनुसार यह लोक ''जीव'' और ''अजीव'' दो मौलिक द्रव्यों की रचना है। जैन दर्शन में जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल को द्रव्य कहते हैं। जबकि वैशेषिक दर्शन में पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आत्मा, आकाश, दिशा, काल और मन इन नौ को 'द्रव्य' कहते हैं। जैन दर्शन के अनुसार यह जगत षड्द्रव्यात्मक है। जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल ये छः द्रव्य हैं। जानने देखने और सुख–दुःख का अनुभव करने वाले को जीव, चैतन्य, आत्मा कहते हैं। जीव द्रव्य के दो भेद हैं– पहला संसारी, दूसरा मुक्त। संसारी जीव दो प्रकार के होते हैं, त्रस जीव और स्थावर जीव। दोनों के पाँच–पाँच भेद हैं। त्रस जीव के पाँच भेद– दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चार इन्द्रिय, असैनी पंचेन्द्रिय, सैनी पंचेन्द्रिय। इसी प्रकार स्थावर जीव के पाँच भेद– पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, एवं वनस्पति कायिक। पुद्गल द्रव्य– स्पर्श, रस, गन्ध और वर्ण जिसमें पाये जाये उसे पुद्गल द्रव्य कहते हैं। जीव और पुद्गल के गमन करने में सहायक धर्म द्रव्य है, गति हेतुत्व गुण वाला है। ठहरने में सहायक अधर्म द्रव्य है, स्थिति हेतुत्व गुण वाला हैं। सब द्रव्यों को अवकाश स्थान देने वाला आकाश, अवगाहन हेतुत्व गुण वाला है और परिवर्तन में सहायक काल द्रव्य हैं। यह विश्व छह द्रव्यों की रचना है। इसमें दो प्रकार के जीव है– 1. मुक्त जीव 2. संसारी जीव। मुक्त जीव को परमात्मा, ईश्वर, सर्व शक्तिमान, सिद्ध, शुद्ध जीव, आदि नाम से जाना जाता है। इन मुक्त जीवों के अतिरिक्त सभी जीव संसारी जीव हैं। जैन दर्शन में जीव शब्द आत्मा और शरीर दोनों के सन्दर्भ में है। जैन दर्शन में जीव का लक्षण, उपयोगमय, कर्त्ता, स्वदेह परिणामी, संसारी रूप में बताया गया है। जीव का उपयोग लक्षण चेतना है। चेतना का अभिप्राय है– सामर्थ्यवान् अर्थात् जीव वही है जिसमें मुक्ति के लिए क्षमता विद्यमान रहती है। अजीव दव्यों में पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल द्रव्य आते है। सृष्टि की रचना इन्हीं द्रव्यों के सहयोग से हुई है। जैन दर्शन में संसार को अनादि और अनन्त मानते हुए जगत को यथार्थ सत्ता के रूप में परिभाषित किया गया है। जगत स्वयं में स्वतंत्र

अस्तित्ववान है। यह अपनी सत्ता के लिए किसी चेतन पर आधारित नहीं है। जैन दर्शन सम्पूर्ण संसार की सत्ता भौतिक और अभौतिक पदार्थों की उपस्थिति के आधार पर मानता है। सम्पूर्ण संसार द्रव्यों से युक्त माना गया है। जैन दर्शन भौतिक वस्तुओं की सत्ता को स्वीकार करते हुए उसका नामकरण पुद्गल के रूप में किया है। अन्य दर्शनों के पंचमहाभूतों की मान्यता ही जैन दर्शन में पुद्गल विशेष शब्दावली द्वारा अभिहित है। पुद्गल का सामान्य अर्थ है भौतिक वस्तु। पुद्गल का लक्षण करते हुए इसे जैन दर्शन में रस, गंध और स्पर्शवान कहा गया है। जिस द्रव्य में उपरोक्त विशेषताएं मिलती हैं उसमें एक निश्चित आकार भी अवश्य होता है इसलिए पुद्गल रूपी पदार्थ है। पुद्गल एक भौतिक तत्व है जिसमें विकास व ह्रास जैसा परिवर्तन घटित होता है। अतः जो द्रव्य पूरण व गलन द्वारा विविध प्रकार से परिवर्तित होता रहता है वह पुद्गल है। पूरण एवं गलन का तात्पर्य विकास व विखण्डन से है जो मात्र पुद्गल द्रव्य में स्वीकार किया गया है। सम्पूर्ण संसार में यही द्रव्य विद्यमान है। इसलिए जैन दर्शन संसार को स्थायी सत्ता मानते हुए संसार में विकास व परिवर्तन को स्वीकार करता है। पुद्गल या भौतिक वस्तुओं के चार मुख्य गुण पाए जाते हैं– स्पर्श, रस, गंध और वर्ण। पुद्गल से प्रत्येक परमाणु में यह चारों धर्म विद्यमान है। इन चारों धर्मो के कुल बीस प्रकार के भेद जैन दर्शन में मिलतें हैं। स्पर्श के आठ भेद, रस के पांच भेद, गंध के दो भेद और वर्ण के पांच भेद। इन चार स्पर्शादि मुख्य गुणों को इन्द्रियॉ अपना विषय बनातीं हैं जो हमें सांसारिक अनुभव का बोध कराते हैं। चूंकि पुद्गल और उसमें विद्यमान गुणों का हमें साक्षात् अनुभव होता है इसलिए संसार का जो अनुभव, जीव करता है वस्तुतः वह जीव द्वारा पुद्गलों का ही संबंध है। इन्द्रिय जनित अनुभव मूर्त पदार्थों का ही हो सकता है। अतः पुद्गल को मूर्त पदार्थ की संज्ञा दी गयी है। पुद्गल का संसार दृश्य जगत है। शेष अन्य द्रव्यों की अनुभूति अतीन्द्रिय होती है। धर्म द्रव्य जीव तथा पुद्गल को गमन कराने में उदासीन सहायक होता है। आगमों में कहा गया है–गति सहायो धर्मः। जो द्रव्य लोक में गतिशील सभी द्रव्यों जीव और सभी पुद्गलो की गति में अनन्य सहायक होता है वह धर्म द्रव्य है। जो द्रव्य लोक में स्थितशील सभीद्रव्यों जीव और पुद्गलो की स्थिति में अनन्य सहायक होता है वह अधर्म द्रव्य है इसके बिना किसी भी प्रकार की स्थिति संम्भव नहीं

है। आगमों में कहा गया है–स्थिति सहायो अधर्मः। जैन दर्शन में खाली स्थान को आकाश कहते है। आकाश सभी वस्तुओं को आश्रय प्रदान करता है। इसे एक सर्व व्यापक अखण्ड, अमूर्त, अवर्ण द्रव्य के रूप में स्वीकार किया गया है। प्रायः काल, समय को मापने के लिए वर्ष, महीने, दिन, पहर, घन्टे, मिनिट, सेकेंड, मुहूर्त, क्षण, पल आदि का प्रयोग होता है। प्रत्येक सचित, अचित द्रव्यों की स्थिति भी समय के अनुसार जानी जाती है, अर्थात् काल को जाने बिना जीवन ही अधूरा है। विश्व के प्रत्येक धर्म, दर्शन और विज्ञान का मूल आधार काल ही है। इसलिए सभी धर्म–दर्शन और विज्ञान ने अपने–अपने ढंग से काल का वर्णन बड़े विस्तार से किया है।